"अणुव्रत है शाश्वत सत्य"

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 3 अक्टूबर, 2009।

"व्यक्ति का मूल्य सत्य की खोज करने में है। सत्य दो प्रकार का है। सामाजिक सत्य और शाश्वत सत्य। अणुव्रत शाश्वत सत्य है। क्योंकि इसका त्रैकालिक महत्व है। भूतकाल में इसकी उपयोगिता थी वर्तमान में है तथा भविष्य में रहेगी।"

उक्त विचार अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में अणुव्रत अधिवेशन के दूसरे दिन कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि राष्ट्र का भौतिक विकास अधिक हो रहा है। जरूरत है नैतिक विकास की। ताकि विकास का संतुलन बना रहे और यह कार्य आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन से ही संभव है।

इस अवसर पर युवाचार्यश्री महाश्रममण ने फरमाया कि मैंने कार्यकर्त्ताओं का प्रगति विवरण बड़े ध्यान से सुना तो पाया कि अलग–अलग स्थानों पर बड़े–बड़े कार्य हो रहे हैं। जरूरत है इन सभी कार्यों को एकजूट रूप में प्रस्तुत करने की। ताकि अणुव्रत का जनोपयोगकार्य लोगों के सामने आ सके।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने कहा कि अणुव्रत जाति, वर्ग एवं सम्प्रदाय से हटकर मानव धर्म के रूप में स्थापित है। यह मानवीय एकता को प्रतिष्ठापित करता है। अणुविभा के अध्यक्ष श्री सोहनलाल गांधी ने कहा कि मनुष्य जीवन को बेहतर बनाने के लिए अणुव्रत से अच्छा कोई दर्शन नहीं हो सकता। कार्यक्रम में मुंबई के डोम्बिवली अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र को महादेवलाल सरावगी फाउंडेशन का आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण पुरस्कार प्रदान किया गया। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चौरड़िया ने डोंबिवली अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के संयोजक आलोक भट्टाचार्य को यह पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी प्रकार बालोतरा अणुव्रत समिति को सर्वश्रेष्ठ समिति का सम्मान डॉ. महेन्द्र कर्णावट द्वारा दिया गया। कार्यक्रम में अच्छा कार्य करने वाले कार्यकर्त्ताओं को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ हर्षा एवं मनीषा के द्वारा अणुव्रत गीत की प्रस्तुति से हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री संजय जैन ने किया। कार्यक्रम में अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, अणुव्रत समिति के मंत्री डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, श्री ओमप्रकाश सोनी, श्री विजयसिंह बरमेचा, श्री राकेश छाजेड़ आदि उपस्थित थे।